एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

प्रथम पत्र : जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. भगवान पार्श्व के जीवन दर्शन को बताते हुए उनकी ऐतिहासिकता पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

Throw light in detail about the life and historicity of Lord Parsva.

अथवा / OR

भगवान महावीर के समय प्रचलित अन्य तीर्थिक विचारधाराओं का विवेचन करें।

Analyse in details the other Tirthik prevelent during the period of Lord Mahavira.

प्र. 2. तीर्थ से क्या तात्पर्य है? जैन तीर्थस्थानों का विवेचन कीजिए।

What is the meaning of 'Tirth'? Discuss in detail the places of Jains Pilgrimage.

अथवा / OR

जैनधर्म में उपासना पद्धति की विशेषताओं एवं प्रकारों का निरूपण करें।

Explain the qualities and types and methods of worship in jain religion.

प्र. 3. आगम के व्याख्या साहित्य के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालें।

Throw light on the gradual development of the literature pertaining to the commentory of the 'Agamas'.

अथवा / OR

आचार्य कुन्दकुन्द की प्रमुख कृतियों का तथा जैनदर्शन के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान का उल्लेख करें।

Give the description of the main works composed by the Acharya Kundkunda and the special contribution made by him in the field of jain philosophy.

प्र. 4. जैन महाकाव्यों का परिचय देते हुए महाकाव्यों की मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

Describe jain epics and illustrate the main themes found in them.

अथवा / OR

गणधर परम्परा को विस्तार से समझाएं।

Explain in detail about tradition of Gandhara.

प्र. 5. निम्नांकित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए –

Write short note on any two of the following -

(i) क्या ऋषभ आदि सभ्यता के प्रवर्तक थे ।

Was Rishabha founder of ancient culture?

(ii) जैन मंदिरों की कुछ प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

Explain a few main characteristics of jain temples.

(iii) व्रत किसे कहते हैं और व्यावहारिक जगत में इसका क्या महत्त्व है?

What is the meaning and importance of Vrata in practical life.

(iv) किन्हीं दो अर्द्धमागधी जैन आगमों का परिचय लिखें।

Write an introduction of any two Ardha Magdhi Jain Agam.

♦♦♦

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा – 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

द्वितीय पत्र : जैन तत्त्व मीमांसा एवं आचार मीमांसा

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. गुण, पर्याय के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उसके भेदाभेद को सिद्ध करें।
Clear the meaning of guna (quality) and paryaya (mode) and prove its bhedabheda.

अथवा / OR

भारतीय दर्शन में द्रव्य के स्वरूप को लिखते हुए जैन दृष्टि से समीक्षा करें।
Explain the nature of substance found in Indian Philosophies and critically analyse it from Jain point of view.

प्र. 2. जैन दर्शन में वर्णित लोक के स्वरूप की व्याख्या करें।
Describe the nature of loka as given in Jain Philosophy.

अथवा / OR

आकाशास्तिकाय के लक्षण को बताते हुए विज्ञान से उसकी तुलना कीजिए।
Explain Akasastikaya and compare it with science.

प्र. 3. जैन दर्शन में वर्णित परमाणु की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
Write a detailed note on Parmanu (atom) as explained in Jain Philosophy.

अथवा / OR

परमाणु के बंध की प्रक्रिया को समझाए।
Explain the process of bandha of parmanu (atom).

प्र. 4. अणुव्रतों को समझाते हुए गृहस्थ जीवन में उसकी उपयोगिता को लिखें।
Explain Anuvrat and write down its importance in householder's life.

अथवा / OR

परिषह कितने हैं? उनकी व्याख्या कीजिए।
How many Parishas (hardships) are there? Describe it.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये –
Write short notes on any four of the following :

(i) षडावश्यक / Sad-Avasyaka (Six essentials)
(ii) महाव्रत / Mahavrat (great vows)
(iii) काल / Kala (Time)
(iv) करुणा / Karuna (Compassion)
(v) संल्लेखना / Sallekhna (Art of dying)
(vi) संघ व्यवस्था / Sangha Vyavstha (Management of Order)

♦♦♦

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

तृतीय पत्र : ध्यान योग एवं कर्म मीमांसा

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन योग में आचार्य हरिभद्र की योग दृष्टियों का विवेचन कीजिए।

Explain the Yoga Drasthies of Acharya Haribhadra in Jain Yoga.

अथवा / OR

धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान पर विस्तार से निबन्ध लिखिए।

Write down a descriptive essay on Dharma Dhayan and Sukla Dhyan.

प्र. 2. प्रेक्षाध्यान का आध्यात्मिक आधार विवेचित कीजिए।

Describe the spiritual base of Prekshadhyana.

अथवा / OR

सर्वार्थसिद्धि के आधार पर अनुप्रेक्षाओं की व्याख्या कीजिए।

Explain anuprekshas according to Sarvartha Sidhi.

प्र. 3. योगदर्शन में प्रतिपादित योग के स्वरूप की विस्तृत व्याख्या करें।

Describe the nature of Yoga as mentioned in Yoga Philosophy.

अथवा / OR

दस पलिबोध एवं चर्या के स्वरूप तथा प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

Explain the nature and kinds of ten impediments and life style (Chariya).

प्र. 4. कर्मबन्धन से आत्मा कैसे मुक्त हो सकती है? व्याख्या कीजिए।

How soul can be free from Karma Bandha? Explain.

अथवा / OR

जैन दर्शन में द्रव्यकर्म एवं भावकर्म के स्वरूप एवं भेदों का वर्णन करें।

Describe the nature and kinds of Dravya Karma and Bhava Karma in Jain Philosophy.

प्र. 5. कर्म सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक साधना के महत्त्व को स्पष्ट करें।

Explain the importance of spiritual sadhana in the context of Karma doctrine.

अथवा / OR

कर्मवाद एवं पुनर्जन्म पर विस्तृत निबन्ध लिखिए।

Write a detailed essay on Karmavada and Rebirth.

♦♦♦

प्र. 3. केवलज्ञान को परिभाषित करते हुए उसके भेदों का वर्णन करें।

Defining Kavalyagyan describe its types.

अथवा / OR

मन:पर्यवज्ञान और अवधिज्ञान में समानता और असमानता को स्पष्ट करें।

Clarify the similarities and dissimilarities between Avadhigyan and Manahparyavagyan.

प्र. 4. जैन न्याय के विकास पर प्रकाश डालें।

Throw light on the development of Jain Nyaya.

अथवा / OR

प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है? विस्तार से लिखें।

What is Pratyaksha Pramana? Write in detail.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए –

Write short notes on any four of the following :

(i) आगम / Aagam

(ii) तर्क / Logic

(iii) अनुमान प्रमाण / Anuman Praman

(iv) हेतु का स्वरूप / Nature of reason

(v) प्रमेय / Prameya

(vi) प्रमाता / Pramata

♦♦♦

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

चतुर्थ पत्र : जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन ज्ञान–मीमांसा के उद्‌भव और विकास के बारे में विस्तार से चर्चा करें।

Discuss in detail about the origin and development of Jain gyan mimansa.

अथवा / OR

ज्ञान और ज्ञेय की अवधारणा स्पष्ट करें।

Write about the concept of knowledge (Gyan) and knowable (Gyeya).

प्र. 2. विस्तार से लिखें/ Write in detail

श्रुतज्ञान / Srutagyan

अथवा / OR

इन्द्रिय क्या है? इसके भेद–प्रभेद की चर्चा करें।

What is sense (Indriya)? Discuss its types.

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

पंचम पत्र : जैन आगम

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. आचारांग सूत्र के आधार पर आत्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद को विस्तार से समझाएं।

On the basis of Acharang Sutra explain the concept of soul and rebirth in detail.

अथवा / OR

षडजीवनिकाय की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनमें जीवत्व की सिद्धि करें।

Clarify the concept of "Shadjivnikaya" and prove the life in them.

प्र. 2. सूत्रकृतांग सूत्र का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसमें वर्णित बंधन एवं बंधन मुक्ति के उपायों पर प्रकाश डालें।

Give a brief introduction of Sutrakritang Sutra and explain the concept of bondage and ways of freedom from bondage.

अथवा / OR

जगतकर्तृत्व के विषय में विभिन्न दर्शनों के मतों को विस्तार से बताएं।

Explain the views of various philosophies of World regarding the Creatior.

प्र. 3. भगवती सूत्र में वर्णित 'कांक्षा मोहनीय' विषय पर प्रकाश डालें।

Explain the concept of "Kanksha Mohaniya" as per enumerated in Bhagawati Sutra.

अथवा / OR

जीव और शरीर के संबंध को विस्तार से समझाएं।

Explain the relationship between soul and body.

प्र. 4. उत्तराध्ययनसूत्र का विस्तृत परिचय दीजिए।

Give an introduction of Uttaradhyayan Sutra in detail.

अथवा / OR

दशवैकालिक सूत्र के आधार पर धर्म का स्वरूप बताएं।

Explain the nature of religion on the basis of Dashwaikalik Sutra.

प्र. 5. समयसार ग्रंथ का परिचय देते हुए सम्यक्त्व के स्वरूप को समझाएं।

Give an introduction of the text 'Samayasar' and explain the nature of Samyaktva (Right point of view).

अथवा / OR

ण वि होदि अत्प्पमत्तो ण पमत्तो जाणणो दु जो भावो।

एवं भणंति सुद्धं णादो जो सो दु सो चेव।।

उपर्युक्त गाथा का अर्थ बताते हुए शुद्धात्मा के स्वरूप को समझाएं।

Write a meaning of above verse and explain the nature of pure soul on the basis of it.

♦♦♦

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

षष्ठ पत्र : अनेकान्त, नय, निक्षेप और स्याद्वाद

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन दर्शन को आचार्य सिद्धसेन के योगदान का निरूपण करें।

Explain the contribution of Acharya Siddhasena to Jain Philosophy.

अथवा / OR

अनुयोगद्वार सूत्र के आधार पर नयवाद का वर्णन करें।

Explain Nayavada on the basis of Anuyogadwara sutra.

प्र. 2. पर्याय के स्वरूप एवं भेदों का विवेचन करें।

Discuss the nature of Paryaya (mode) and its kinds.

अथवा / OR

जीव एवं पुदगल के सम्बन्ध की व्याख्या करें।

Explain the relationship of Jiva (soul) and Pudgala (matter).

प्र. 3. जैनदर्शन के अनुसार सत् को निरूपित करें।

Explain the Sat (Reality) according to Jain Philosophy.

अथवा / OR

वस्तु की सामान्य विशेषात्मकता का विवेचन करें।

Discuss the universal and particular nature of substance.

प्र. 4. सप्तभंगी का लक्षण लिखते हुए स्पष्ट कीजिए कि भंङ्ग सात ही क्यों होते हैं?

Explaining the nature of Saptabhangi, Explain why the bhanga are seven only.

अथवा / OR

प्रमेय के स्वरूप एवं पररूप का विवेचन करें।

Discuss the Swaroopa and Perroopa of Prameya.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिये –

Write short notes on any four of the following :

(i) अनेकान्त / Non-absolutism

(ii) निक्षेप / Nikshepa

(iii) अनेकान्त एवं स्याद्वाद में अंतर / Difference between Anekanta and Syadvad

(iv) द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक नय / Drawyarthika and Paryayarthika naya

(v) भगवतीसूत्र / Bhagawati Sutra

(vi) पर्याय / Paryaya

(vi) सन्मतितर्कप्रकरण / Sanmatitarka-Prakaran

♦♦♦

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

सप्तम पत्र : जैन धर्म-दर्शन और भारतीय धर्म-दर्शन

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन एवं वेदान्त दर्शन के अनुसार आत्मा के स्वरूप का विवेचन करें।

Describe the nature of the soul according to Jain and Vedanta Philosophy.

अथवा / OR

जैन एवं जैनेत्तर दर्शन के अनुसार कार्य-कारण को समझाइए।

Describe the cause and effect according to Jain and Non-jain philosophy.

प्र. 2. वेदान्त एवं योगदर्शन में अपरिग्रह का स्वरूप समझाइए।

Write the nature of Aparigraha as mentioned in Vedanta and Yoga philosophy.

अथवा / OR

बौद्ध एवं पुराणों में वर्णित तप के बारे में लिखें।

Describe the Tapa (Penance) according to Bauddha and Puranas.

प्र. 3. जैन,बौद्ध और योग दर्शन में व्रत का स्वरूप समझाइए।

Illustrate the nature of Vratas as enumerated in Jain, Bauddha and Yoga philosophy.

अथवा / OR

जैन एवं वेदान्त दर्शन के अनुसार कर्म सिद्धान्त का विवेचन करें।

Narrate in detail the Karma philosophy acording to Jain and Vedanta philosophy.

प्र. 4. जैन एवं बौद्ध परम्परा में अनेकान्तवाद की अवधारणा स्पष्ट करें।

Elucidate the concept of Anekantvad according to Jain and Buddhist tradition.

अथवा / OR

न्यायदर्शन के अनुसार अनुमान की विवेचना करें।

Describe Anuman (Inference) according to Nyaya philosophy.

प्र. 5. विभिन्न ध्यान प्रणालियों का विवेचन करें।

Describe the various Meditation Systems.

अथवा / OR

गीता के अनुसार ज्ञानयोग, भक्तियोग व कर्मयोग की विवेचना करें।

Explain Gyanyoga, Bhaktiyoga and Karmayoga according to the Gita.

♦♦♦

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा - 2013

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

अष्टम पत्र : जैन धर्म-दर्शन और भारतीयेतर धर्म-दर्शन

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. अरस्तू के द्रव्य एवं आकार की जैनदर्शन के द्रव्य एवं पर्याय की अवधारणा से तुलना करें।

Compare Aristotle's Substance and Form with Jaina concept of Dravya and Paryaya.

अथवा / OR

जैन एवं काण्ट के नीति आचारशास्त्र में क्या साम्यता एवं विषमताएं हैं?

What are the similarities and dismilitaties between Ethics of Kant and Jainism?

प्र. 2. देशकाल की अवधारणा को आइन्स्टीन, न्यूटन एवं जैन दृष्टि से समझाइए।

Describe the concept of space and time from Einstein and Newton and Jaina point of view.

अथवा / OR

देकार्त, लाइबनीज एवं जैनधर्म में वर्णित शरीर-आत्मा के सम्बन्ध की चर्चा करें।

Discuss Mind-body-relation as explained by Descartes, Libniz and Jain Religion.

प्र. 3. कारणता के सिद्धान्त पर ह्यूम एवं जैन दर्शन के विचारों को प्रस्तुत करें।

Explain Jain and Hume's point of view on theory of causuality.

अथवा / OR

जगत के विषय में लाइबनीज एवं जैन अवधारणा को प्रस्तुत करें।

Discuss Libniz and Jaina point of view of Universe.

प्र. 4. इस्लाम धर्म को जैनधर्म के संदर्भ में समझाइए।

Explain Islamic Religion in the context of Jain Religion.

अथवा / OR

कन्फ्यूशियस धर्म एवं जैनधर्म की समीक्षा करें।

Evaluate Confucious religion and Jain Religion.

प्र. 5. क्या जैनधर्म वर्णित अहिंसा से पर्यावरण का संतुलन संभव है ? स्पष्ट करें।

Is it possible to protect environment through nonviolence as explained in jain religion? Discuss.

अथवा / OR

स्वस्थ समाज की संरचना में आपके अनुसार अणुव्रत क्या भूमिका अदा करता है? व्याख्या करें।

What role can Anuvrat play in building a healthy society according by you ? Explain.

♦♦♦